नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद

अवध गरिमा

ग्यारहवां अंक अगस्त, 2021

संयोजक

बैंक ऑफ़ बड़ौदा

Bank of Baroda

विजया VIJAYA | देना DENA

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद की बैठक

नराकास फैजाबाद की 12वीं बैठक दिनांक 24.02.2021 को क्षेत्रीय प्रमुख श्री निहार रंजन प्रधान की अध्यक्षता में टीम्स के माध्यम से संपन्न हुई.

इस बैठक में राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में श्री अजय मलिक, उप निदेशक कार्यान्वयन, मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। बैठक में जुलाई 20 से दिसंबर 20 तक के आंकड़ों की समीक्षा की गई।

बैठक में नराकास की छमाही पत्रिका अवध गरिमा का विमोचन किया गया। बैठक का संचालन मुख्य प्रबंधक राजभाषा, श्री दिनेश कुमार मित्तल ने किया और पंजाब नैशनल बैंक के वरिष्ठ प्रबंधक श्री संतोष कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया. इस अवसर पर लिए गए फोटोग्राफ अवलोकनार्थ संलग्न हैं।

अगस्त, 2021

अवध गरिमा

अगस्त, 2021

वर्ष : छठा अंक : ग्यारहवां

नराकास, फैजाबाद की छमाही पत्रिका

संरक्षक

श्री अनिल कुमार झा

अध्यक्ष, नराकास-फैजाबाद
एवं क्षेत्रीय प्रबन्धक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

संपादक

श्री नीरज कुमार सिंह

सदस्य सचिव, नराकास-फैजाबाद
एवं प्रबंधक (राजभाषा), बैंक ऑफ़ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

संपादक मण्डल

संतोष कुमार

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
पंजाब नैशनल बैंक
मण्डल कार्यालय,अयोध्या

मयंक तिवारी

पी.जी.टी., हिन्दी
जवाहर नवोदय विद्यालय, अयोध्या

योगेन्द्र प्रसाद

कार्यक्रम अधिशासी
आकाशवाणी, अयोध्या

अनुक्रमणिका

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संदेश	2-3
2.	जनपद अयोध्या की शान : पद्मश्री मो. शरीफ खान	4-5
3.	कविताएं :	
	(ए) सफलता एक नदी	6
	(बी) मैं बैंकर हूँ	7
	(सी) राजभाषा हिन्दी	8
	(डी) हिन्दी की समरसता	8
	(ई) हमारी और आपकी जिन्दगी का सफर	9
	(एफ) वो आदमी	10
5.	भारतीय संस्कृति एवं आज की युवा पीढ़ी	11
6.	इच्छा एवं आवश्यकता में अंतर	12
7.	शहरों को स्वच्छ एवं सुरक्षित रखने में जनसहभागिता	13-14
7.	पुस्तक समीक्षा ''वैदिक काल-भारतका लोक इतिहास 3''	15-17
8.	सदस्यों की सूची	18-20

• केवल आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित
• पत्रिका में प्रकाशित विचार संबंधित लेखकों के अपने विचार हैं, उनसे समिति का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सम्पर्क सूत्र
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या
बड़ौदा भवन,साकेतपुरी कालोनी देवकाली
ओवरब्रिज के पास, जिला- अयोध्या (उ.प्र.)
rajbhasha.faizabad@bankofbaroda.com

अध्यक्ष महोदय का संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद की छमाही पत्रिका ''अवध गरिमा'' के माध्यम से पहली बार आपसे संवाद करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है । ''अवध गरिमा'' सभी सदस्य कार्यालयों के सामूहिक प्रयासों का प्रतिफल है।

पत्रिका का नियमित प्रकाशन सदस्य कार्यालयों में कार्यरत प्रतिभाओं को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को संवारने के लिये एक मंच का कार्य करेगा एवं साथ ही विभिन्न सदस्य कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिये हो रही गतिविधियों की जानकारी भी देगा। समिति के सदस्यों द्वारा उत्साहवर्धक सहभागिता के लिये मैं सभी सदस्यों को साधुवाद देता हूं।

अयोध्या नगरी देश की प्राचीनतम एवं सांस्कृतिक नगरी होने के कारण यहां की नगर समिति का भी कार्य-दायित्व बढ़ जाता है। आशा करता हूं कि सभी सदस्य कार्यालयों की सक्रिय सहभागिता से नराकास, फैजाबाद न केवल देश के समस्त समितियों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाएगी अपितु नए कीर्तिमान भी स्थापित करेगी।

हमारा यह प्रयास होना चाहिये कि हम स्वयं राजभाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ाने की दिशा में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाये एवं अपने अधीन स्टॉफ सदस्यों के लिये अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करें। पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी स्टॉफ सदस्यों को मैं हार्दिक बधाई देता हूं एवं कामना करता हूं कि आप सभी पत्रिका के अनवरत प्रकाशन के लिये अपना निरंतर सहयोग बनाए रखेंगे ।

शुभकामनाओं सहित !

अनिल कुमार झा
अध्यक्ष (नराकास, फैजाबाद)
एवं क्षेत्रीय प्रमुख
बैंक ऑफ़ बड़ौदा,
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

सदस्य सचिव की कलम से...

अयोध्या के विभिन्न केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं उपक्रमों का एक साझा मंच है नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद जो कि राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में अहम भूमिका निभाती है । नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद की छमाही पत्रिका "अवध गरिमा" का 11वां अंक आपके समक्ष रखते हुए प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

हमारे विचारों एवं भावों को प्रभावशाली एवं सार्थक रूप में प्रकट करने का माध्यम भाषा है। हमारे देश के बड़े भूभाग की भाषा हिंदी है इसलिये राजभाषा बनायी गयी। जहां तक हिंदी के सामाजिक संदर्भ की बात है, उसका स्वरूप वैविध्यपूर्ण है, इसलिये अलग–अलग वर्गों, क्षेत्रों, समुदायों एवं व्यवसाय के लोग अपने–अपने तरीके से हिंदी बोलते हैं, हिंदी भाषा का यह लचीलापन ही उसकी शक्ति है।

भाषाएं विचारों की संवाहक होती है, विचार मनुष्य की अंतरात्मा की अभिव्यक्ति करते हैं । ऐसे में हमारे विचारों का उद्‌गार यदि हमारी मातृभाषा में प्रकट हो तो हम अपने मनोभावनाओं को ठीक प्रकार से व्यक्त करने में सक्षम हो सकते हैं।

पत्रिका में सृजनात्मकता के साथ–साथ भाषा को भी विशेष महत्व दिया गया है । "अवध गरिमा" की सामग्री विविधतापूर्ण, आकर्षक एवं रोचक है। इसके लिये सभी रचनाकारों व लेखकों को हार्दिक बधाई। उन सभी सदस्य कार्यालयों का पुनः आभार जिन्होंने पत्रिका के लिये स्तरीय सामग्री प्रेषित की, साथ ही, संपादन मंडल के सभी सदस्यों का भी आभार जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया। मुझे विश्वास है कि "अवध गरिमा" को उत्तरोत्तर उत्कृष्ट बनाने में आप सभी का रचनात्मक सहयोग निरंतर प्राप्त होता रहेगा।

शुभकामनाओं के साथ !

नीरज कुमार सिंह
सदस्य सचिव (नराकास, फैजाबाद)
एवं प्रबंधक (राजभाषा)
बैंक ऑफ़ बड़ौदा,
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

जनपद अयोध्या की शान : पद्मश्री मोहम्मद शरीफ खान

योगन्द्र प्रसाद
कार्यक्रम प्रमुख/
सह राजभाषा अधिकारी
आकाशवाणी फैज़ाबाद

जनपद अयोध्या का नाम रौशन करने वाले मोहम्मद शरीफ चचा ने सिद्ध कर दिया कि समाज का अन्तिम व्यक्ति भी अपने अच्छे कार्यो से राष्ट्र के प्रथम नागरिक से ''पद्मश्री" सम्मान प्राप्त कर सकता है। पेशे से साइकिल मिस्त्री मोहम्मद शरीफ खान अब तक 25000 लावारिस लाशों का अन्तिम संस्कार अपने हाथों से कर चुके हैं। राष्ट्रपति से पद्मश्री प्राप्त करने और प्रधानमंत्री से मिलते हुए देखकर अयोध्यावासी गदगद हो गये। सोशल मीडिया पर उनकी फोटो खूब वायरल हुई। जनपद वासियों का सीना गर्व से चौड़ा हो गया कि चचा हमारे जिले के रहने वाले हैं।

खिड़की अलीबेग गुदड़ी बाजार में किराये के मकान में रहने वाले 82 वर्षीय चाचा का समाजसेवा का जज़्बा ज़रा भी कम नहीं हुआ। 25 वर्षों तक लगातार लावारिश शवों का अंतिम संस्कार करते रहे, अगर शव की पहचान हिन्दू के रूप में हुई तो दाह संस्कार करते, इसके लिए उनको कोई लकड़ी दे देता तो कोई कफ़न। अगर नहीं मिला तो अपने सीमित संशाधनों से यमथरा घाट ले जाकर दाह संस्कार करते थे, इसमें घाट के श्री संतोष पंडित पूरे विधि विधान से निःशुल्क सहयोग करते थे। अगर शव की पहचान मुस्लिम धर्म से हुई तो तकिया में सुपुर्द-ए-खाक किया जाता हैं। इसकी शुरु आत कैसे हुई, यह पूछने पर शरीफ़ चाचा ने रोते हुए बताया ...

28 वर्ष पहले मेरा 22 वर्षीय बेटा दवा के कारोबार के सिलसिले में सुल्तानपुर गया था, अज्ञात कारणवश किसी ने उसकी हत्या कर कूड़ेभार स्टेशन के पास शव को बोरे में भरकर फेंक दिया। कई दिनों तक शव की दुर्गति होती रही। बाद में लावारिश मानकर शव का अन्तिम संस्कार कर दिया गया। अंतिम समय में बेटे का मुँह भी नहीं देख पाया मैं, तब से मैंने प्रण लिया कि आज से किसी लावारिस शव की दुर्गति नहीं होने देंगे चाहे जिस भी धर्म का हो।

मोहम्मद शरीफ़ खान को फैज़ाबाद जिला प्रशासन ने अवैतनिक विशेष पुलिस अधिकारी का दर्जा देकर एक पहचान पत्र भी दिया है। जिले के सभी अस्पतालों, कार्यालयों में इनका मोबाइल नम्बर और पहचान दर्ज है। शरीफ़ जी बताते है कि कई वर्षो तक खुद एक रिक्शा चलाकर शवों का अंतिम संस्कार करते रहें, लेकिन ढलती

महामहिम राष्ट्रपति महोदय से पद्मश्री सम्मान प्राप्त करते हुए मोहम्मद शरीफ खान

उम्र में कुछ और लोगों को मैंने अपने साथ जोड़ लिया है। सड़ी गली लाशों को भी सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया जाता है। जिले के कई समाजसेवी भी अब सामने आ गये हैं जो मुझे आर्थिक सहयोग करने लगे हैं।

अमिर खान के "सत्यमेव जयते" धारावाहिक में भी शरीफ चाचा को मुम्बई बुलाया गया था। आकाशवाणी फैज़ाबाद ने भी इनके कार्यो पर एक रूपक "दर्द जो मिशाल बन गया" बनाया था जिसके लिए राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार मिला।

शरीफ चचा को कई बार सांसद, विधायक, जिलाधिकारी, आयुक्त, डीआइजी ने भी अपने कार्यक्रमों में बुलाकर सम्मानित किया है। इनका कहना है कि सम्मान पाकर मैं दोगुने उत्साह के साथ इस काम में लग जाता था। परिवार के पालन पोषण के लिए आज भी इनकी साइकिल की दुकान है।

बढ़ती उम्र और अस्वस्थ होने के कारण चचा अब खुद तो यह काम नहीं कर पा रहे है लेकिन बहुत सारे लोगों के प्रेरणाश्रोत बन गये हैं, समाज के कुछ लोग और संस्था इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर है।

लेखक के साथ बातचीत करते हुए मोहम्मद शरीफ़ खान

सफलता एक नदी

पवन कुमार
कनिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी
राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय, अयोध्या

सफलता एक नदी
सफलता का स्वर्णिम अध्याय, मिलेगा कब ?
पता नहीं ?
कीचड़ -जीवन की धरती पर,
कमल खिलेगा कब ? पता नही।
सिर्फ पता है हे मानव !
वर्तमान कर्म और मेहनत,
जो प्रेरित करता है,
करने को समर्पित,
अपना जीवन, तन और मन।
मन की नदी तलासती है,
हर दिन अनेक राहों को,
पर उसको भी मिल जाना होता है,
एक दिन,
सागर की ही बाँहों में।
पथ में असंख्य बाधाएं आये,
ककड़ीले चट्टान टकराएँ,
नदिया अपनी राह न बदले,
जब तक सागर से वो मिल न ले,
इससे पहले जो रूक जाती है ,
अक्सर ताल या झील बन जाती है।
एक तो पापी को है तारे,
दूजे में जन मल मूत्र बिसारे।
यही है कर्म का विधान ,
जो न जाने हो परेशान।

मैं बैंकर हूँ

गीतांजली
पंजाब नैशनल बैंक
अयोध्या

''मैं कौन हूं ?
ये प्रश्न पूछा गया मुझसे, मैंने उत्तर दिया कि मैं बैंकर हूं।
पुनः प्रश्न हुआ ''क्या काम है बैंकर का''?
मैंने उत्तर दिया कि काम है मेरा ऋण देना जरूरतमंदों को और कभी कभी अमीरों को,
उनकी झूठी शान में करने और बरकत को।
काम है मेरा रखना लोगों का धन सुरक्षित, हो चाहे वो अमीरों का या फिर गरीबों का,
इसी धन को और संवर्धित करना और करना ग्राहकों का हित।
सैलरी हो या पेंशन हो या वो हो जनधन, सभी प्रकार का धन होता है बैंक में सुरक्षित और संवर्धित।
ऋण देकर की जाती है सहायता समुचित।
खुद के अनगिनत किस्से भूल जाती हूं, जब गैरों के दुख के किस्से सुनती हूं।
मैं बैंकर हूं, गैरों के दुख में इमदाद करती हूं, दिल को बड़ा सुकून मिलता है जी सच में,
जब किसी की मुश्किल घड़ी में काम आती हूं, जीती रहो बच्ची, ऐसा आशीर्वाद पाती हूं।
कितनी भी कठिन परिस्थिति, क्यूं न हो देश दुनिया की,
सबकी आशा होती है बैंकर से मदद की।
भला हो मेरी इस नौकरी का, जो मैं बुरे दौर में भी आशा जगाती हूं, मैं बैंकर हूं, देश के काम आती हूं।
आया था एक वक्त रातोंरात हुई नोटबंदी का, और है अभी संकट ये कोरोना–काल का,
ना तब हार मानी थी, ना आज हार मानी हूं, मैं बैंकर हूं, देश के काम आती हूं।
मैंने तो अपना किस्सा लिख दिया, कुछ मेरे साथी बैंकर भी हैं, जिनके अलग ही किस्से हैं।
कुछ अपने घर से कोसों दूर रहते हैं और कुछ घर को ही भूल गए हों, ऐसे रहते हैं।
फिर भी सब अपना कर्तव्य निभाते हैं, बैंकर हैं, हम देश के काम आते हैं।
निजीकरण की खबर पढ़कर–सुनकर, हृदय द्रवित हो जाता है,
क्या सरकार और जनता को, कुछ भी नहीं नजर आता है?
जिनके पास होता नहीं कुछ,उनकी भी मदद करता है बैंकर,
देश के पिछड़े से पिछड़े वर्ग तक, पहुँचता है राष्ट्रीयकृत बैंकों का बैंकर।
पर अब न पूछना मुझसे कि मैं कौन हूं ?
शायद कह न पाऊं और मैं मौन रह जाऊं, या फिर बैंकर से अब कोई और ना बन जाऊं।
देश की मदद करते–करते, अब खुद की मदद भी करनी है,
बैंकर साथियों को ये लड़ाई, अब स्वयं
बनना होगा अब समुराई, क्यूंकि बैंकर हू
''मैं कौन हूं''? मैं बैंकर हूं।

राजभाषा हिन्दी

उमेश कुमार
अपर अभियन्ता (सिविल)
बीएसएनएल, अयोध्या

जागो माँ के वीर सपूतों, जानो माँ की भाषा को।
हिन्दी को अपना के, पूरा कर दो माँ की आशा को।। जागो माँ के....
जिस धरती पर जन्म लिये, तुम समझो इसकी भाषा को।
सब भाषा से प्रेम सिखाने वाली माँ की भाषा को।। जागो माँ के....
जाति धर्म का भेद नहीं है, भारत माँ की भाषा में।
जन-मानस का प्रेम मंत्र है, अपनी हिन्दी भाषा में।। जागो माँ के....
भारत संचार निगम कर्मी मन लगी यही अभिलाषा है।
हिन्दी में हम काम करें ये भारत माँ की भाषा है।। जागो माँ के....
तन-मन से अपना लो साहिब जन-जन की अभिलाषा को।
शत-शत नमन करें हम अपनी प्यारी हिन्दी भाषा को।। जागो माँ के....
कोटि-कोटि जन के मन में अब जाग रही जिज्ञासा में।
हिन्दी में ही जन्म लिए हम, प्राण त्यजे इस भाषा में।।
जागो माँ के वीर सपूतों, जानो माँ की भाषा को।।

हिन्दी की समरसता

दशरथ यादव
(गणित शिक्षक)
केंद्रीय विद्यालय, फैजाबाद कैंट
अयोध्या,

तप्त ह्रदय को शीतल कर दे, वह भाषा विज्ञान है हिंदी।
भाव-विभोर मनुज को कर दे, वह अविरल अविराम है हिंदी।
घर-आंगन सावन की बूंदें, खेत और खलिहान है हिंदी।
सरसों के खेतों में सुंदर, पीत रंग परिधान है हिंदी।
गुलशन की झुरमुट बेलों में, सुंदर कली समान है हिन्दी।
रात चांदनी चमक रही है, चातक की मुस्कान है हिंदी।
भगत सिंह आजाद की बोली, इकबाल की जान है हिंदी।
तिलक जवाहर बोस की भाषा, गांधी की पहचान हिंदी।
तुलसी सूर कबीर की साखी, मीरा की विषपान है हिंदी।
भाषा की सरिताओं में, गंगा नदी समान है हिन्दी।
भारत मां के भाल सुशोभित, अमिट सुधा रसपान है हिंदी।
भारत मां की आन है हिंदी, नील गगन की शान है हिंदी।

भारतीय संस्कृति और आज की युवा पीढ़ी

अशोक कुमार विश्वकर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (कार्यालय प्रशासन विभाग)
बैंक ऑफ बड़ौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

विश्व की प्राचीनतम तथा महानतम सभ्यताओं तथा संस्कृतियों में से एक भारतीय संस्कृति है. जिसका मूल आधार – अहिंसा परमोधर्मः, सत्यमेव जयते, अतिथि देवो भवः, वसुधैव कुटुम्बकम आदि सिद्धांत वाक्य है।

परंतु आज समाज में चारों तरफ भौतिकवादी मानसिकता पनप रही है, आज की शिक्षा व्यवस्था भी केवल डिग्री, डिप्लोमा दिलाती है, मस्तिष्क के विकास, चरित्र के उन्नयन आदि से इसका कुछ लेना-देना नहीं है। इसीलिए आज साक्षर तो बहुत हैं परंतु ज्ञानवान, चिंतक तथा सहृदय विचारवान बहुत कम हैं।

आज की शिक्षा मात्र नौकरी पाने का साधन है, श्रेष्ठ मनुष्य बनाने का नहीं, आज भी शिक्षा उसी ढर्रे पर चल रही है जिस पर अंग्रेजों ने उसे चलाया था। आजादी के बाद इसमें जो भी परिवर्तन होने चाहिये वे नहीं हुए, इसी का परिणाम है कि आज का युवा अपनी जड़ों से कटा हुआ है. वह सब कुछ है परंतु अहिंसा, त्याग, सत्य, न्याय, दया, प्रेम, करुणा, परोपकार तथा अतिथि सत्कार आदि से कोई सारोकार नहीं है तथा माता-पिता एवं गुरु का सम्मान, मानव-मात्र एवं जीव-मात्र के प्रति प्रेम आदि भारतीय सिद्धांतों, आदर्शों और जीवन-मूल्यों से वह बिल्कुल अनभिज्ञ है।

शिक्षा के स्वरूप के अतिरिक्त जो अन्य कारण हैं, जो आज के युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से दूर ले जा रहे हैं उनमें से प्रमुख आज के संचार माध्यम हैं. टेलीविजन, मोबाइल, पत्र-पत्रिकाओं ने भारतीय समाज में जागरुकता तो उत्पन्न की है परंतु उसे उसके मूल से नहीं जोड़ा, इसीलिए यह जागरुकता नकारात्मक अधिक साबित हुई है और सकारात्मक कम।

इन संचार माध्यमों में पाश्चात्य चकाचौंध से प्रभावित होकर संपूर्ण भारतीय समाज के समक्ष एक अनैतिक तथा उच्छृंखल संस्कृति परोसी है जो हिंसा, नग्नता और अश्लीलता की चासनी में सराबोर हैं. आज आवश्यकता इस बात की है कि हम बड़े लोग बच्चों के सम्मुख एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत करें जिसे वे अपना सकें, दूसरों को सुधारने, उपदेश देने की अपेक्षा हम स्वयं को सुधारें। कबीरदास जी के शब्दों में – ''जो मन खोजा आपना, मुझसे बुरा न को''।

जब तक माँ-बाप को भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की वास्तविकता, महानता तथा उसके गौरव का ज्ञान नहीं होगा, वे बच्चों को क्या सिखायेंगे ? यह सामूहिक प्रयास प्रत्येक व्यक्ति निजी तौर से शुरु करे।

प्राचीन महापुरुषों, राष्ट्रभक्तों, पौराणिक आदर्शों की कहानियाँ वर्तमान संदर्भों में ढालकर बच्चों तथा युवाओं को पढ़ने के लिये दी जानी चाहिये. इसी से उन्हें नैतिक शिक्षा, उदात्त भावनाएं तथा श्रेष्ठ जीवन मूल्य मिलेंगे तथा पाश्चात्य चकाचौंध के पीछे की असलियत एवं उनके दुष्परिणामों को हम खुद पहचानें तथा अगली पीढ़ी को भी बताएं, परिणामस्वरूप, हमारी युवा पीढ़ी इस भारतीय संस्कृति की धरोहर को आगे ले जाने में सक्षम होगी।

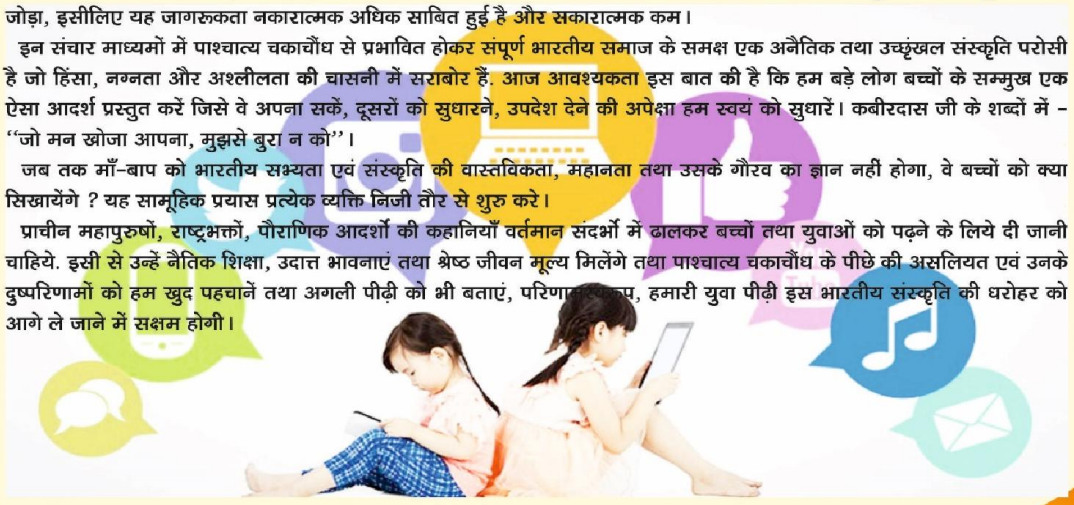

वो आदमी

तन्मय श्रीवास्तव
प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी)
पंजाब नैशनल बैंक
मण्डल कार्यालय, अयोध्या

ये थके से पाँव, थकी हुई बोझल निगाहें, दास्तान बयां करते हैं दिन भर के सफर की,
बच्चों की हँसी और उनके भविष्य की कल्पना, मना ही लेता है फिर उसे अगले सफर के लिए।
सोचता है रुक जाए, रुक जाए इक रोज वो भी, पर संकल्प है एक, जो उसे बढ़ाता रहता है ,
इक उम्मीद, इक आस है सुनहरे कल की, मंजिल करीब है, वो अपने दिल को बहलाता रहता है।
खुद पर खुद के कर्मों का बोझ बढ़ाता वो आदमी, फिर भी पर्वत सा अडिग वो अपने इरादों पर,
टूटता है वो भी, पर यकीन उसे पूरा है, सयानी बहिन और बूढ़ी माँ से किए अपने वादों पर ।
हिम्मत और हौसलों का अद्भुत संगम सा लगता है , अक्सर परिवार की फिक्र में, रात-रात भर वो जागता है।
हर मजबूरी से खुद को मजबूत बनाता, वो आदमी खुद को समझाता जा रहा है।
हर तकलीफ, हर दर्द में भी वो, जाने कैसे मुस्काता जा रहा है।
गुस्सा आने पर, बच्चों को वो डांट भी लगाता है, है हकीकत ये भी, कि बाद में खुद भी वो पछताता है।
दिल में दबा प्यार कभी खुल के बाहर नहीं ला पाता है ,
हर दुख को अपना बताकर, "वो आदमी" बस अपनों की खुशियों को चाहता है।
भरोसा है उसको,
भरोसा है उसको, कि उसका परिश्रम यूं ही व्यर्थ नही होगा, सपनों के बिना इस जीवन का, कोई भी अर्थ नहीं होगा।
एक दिन, हाँ एक दिन फिजाओं का रंग बदलेगा, चट्टान सा उसका हौसला जरूर रंग लाएगा।
तरसती हैं जिस सुकून के लिए उसकी निगाहें, वो सारी खुशियाँ, हाँ सारी खुशियाँ भी संग लाएगा।
उसकी उम्मीदों का "सहारा", चलेगा उसके कदमों से कदम मिला कर और काँधों का बोझ बांटेगा, वो तब राहत पाएगा।
बस इसी उम्मीद मे चलता जा रहा है वो आदमी, कि एक दिन, हाँ एक दिन वो दिन भी आएगा...
हाँ, एक दिन वो दिन जरूर आएगा...

हमारी और आपकी जिन्दगी का सफर

सृष्टि
सर्वे पर्यवेक्षक
राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय, अयोध्या

दो पल की जिंदगानी है, आज बचपन खड़ा ,
कल आती नौजवानी है
परसों आएगा बुढ़ापा, फिर खत्म कहानी है,
चलो हँस कर जिए, थोड़ा खुलकर जिए,
फिर आने वाली हर घड़ी सुहानी है
दो पल की जिंदगानी है,
कल जो बीत गया, सो बीत गया, आने वाला कल तो आएगा ही ,
आज अभी जिओ, और जमकर जियो,
फिर तो सबको देनी कुर्बानी है।
दो पल की जिंदगानी है।
आओ जिंदगी के गीत हम गाते चलें, कुछ बाते मन की सुनाते चलें,
जो रूठे है अपने, मनाते चले, हर प्राणी को दिल से गले से लगाते चलें,
फिर खत्म अपनी कहानी है।
दो पल की जिंदगानी है।
आओ जीवन की कहानी, लिखे प्यार की बातो से, कुछ मीठे बोल,
और नम्र जज्बातों से, कुछ रिश्ते नये बनाते चले,
आओ जिन्दगी के गीत गाते चलें,
क्या लाये थे, क्या ले जायेंगे,
आओ सबको अपने साथ मिलाते चलें,
जिन्दगी का सफर यूं बिताते चलें,
आओ जिन्दगी के गीत गाते चलें,
हर रिश्ते नये हम निभाते चलें।

इच्छा और आवश्यकता में अंतर

स्कंद कुमार चौबे
परामर्शदाता
जवाहर नवोदय विद्यालय
अयोध्या

आज के परिवेश में मानव दिन–प्रतिदिन भौतिकवादी होता जा रहा है और इसी पर निर्भर हो गया है. इस बाजारीकरण में कंपनियां वस्तुओं का प्रचार करती हैं और हम इच्छानुसार उस वस्तु का उपभोग कर लेते हैं बगैर यह जाने कि उस वस्तु की आवश्यकता है या नहीं। व्यक्ति इच्छा और आवश्यकता में अंतर नहीं कर पाता है, वह केवल यह देखता है कि पड़ोस के परिवार में जो सामान आया है, वह सामान मेरे घर में भी होना चाहिये, चाहे भले ही उस वस्तु की आवश्यकता है या नहीं।

आवश्यकता ऐसी वस्तु है जिनके बिना हम जीवित नहीं रह सकते हैं जैसे शारीरिक रूप से जीवित रहने के लिये रोटी, कपड़ा, मकान और हवा की आवश्यकता होती है, बिना आवश्यकता के वस्तु को खरीदने से हम पैसा बर्बाद करते हैं और साथ ही साथ प्राकृतिक संसाधनों के शोषण में पूरा सहयोग करते हैं. ऐसी चीजों का घर में कूड़े की तरह ढेर बन जाता है. इसलिये कहा गया है कि महान व्यक्ति का अनुकरण करना चाहिये और उन्हें आदर्श बनाना चाहिये।

एक बार की बात है कि विश्व के एक महान दार्शनिक प्लेटो, एथेंस में एक दिन सुबह सड़क पर टहलने के लिये निकले, जिस सड़क पर वह टहल रहे थे, उसी सड़क पर उनके एक शिष्य की दुकान थी, शिष्य गुरु को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ जैसे स्वयं ईश्वर पधारे हों। उसने अपने गुरु के चरणों का वंदन किया और अपनी दुकान पर ले गया। गुरु शिष्य की दुकान देखकर बहुत खुश हुए और ऐसे ही मार्ग पर प्रगतिशील होने के लिये आशीर्वाद भी दिया। शिष्य ने गुरु से कहा कि इस दुकान में जो भी वस्तु आपको पसंद आए, आप ले लीजिए. गुरु जी दुकान में चारों तरफ देखने लगे और कुछ समय तक मौन रहने के बाद बोले कि इसमें से मुझे किसी भी चीज की आवश्यकता नहीं है।

प्लेटो के उत्तर के माध्यम से हम इच्छा और आवश्यकता में अंतर को समझ सकते हैं कि इच्छा के अनुसार नहीं आवश्यकता के अनुसार वस्तु को खरीदना चाहिये, साधारण तरीके से जीने से तात्पर्य कम इच्छा के साथ जीना परंतु अपने अंतर्मन को खुशी, संतुष्टि और बुद्धिमत्ता से सदैव भरा रखना चाहिये।

शहरों को स्वच्छ एवं सुरक्षित रखने में जनसहभागिता

सुभाष चन्द्र त्रिवेदी
वरिष्ठ प्रबंधक
निरीक्षण एवं लेखा परीक्षण विभाग
बैंक ऑफ बडौदा
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने आजादी से पूर्व यह कहा था कि ''स्वच्छता आजादी से अधिक महत्वपूर्ण है।'' उन्होंने लोगों से अपने दैनिक जीवन में स्वच्छता अपनाने का आग्रह किया था। गाँधी जी का यह विश्वास था कि स्वच्छ समाज का निर्माण जन–जागरूकता व जनसहभागिता से ही किया जा सकता है। गांधीजी का यह कथन आजादी के सत्तर वर्षों बाद भी उतना ही प्रासंगिक व सत्य है।

स्वच्छ वातावरण में हम अधिक सुरक्षित महसूस करते हैं। स्वच्छता व सुरक्षा एक दुसरे के पूरक हैं तथा जनसहभागिता वह रास्ता है, जिससे होकर हम स्वच्छ व सुरक्षित समाज की मंजिल तक पहुँच सकते हैं ।

स्वच्छ व सुरक्षित शहर : जनसहभागिता की भूमिका

कोई भी शहर नागरिकों से मिलकर ही बनता है। शहर से अगर उसके नागरिकों को निकाल दिया जाये तो वह कंकरीट के एक जंगल से बढ़कर कुछ भी नहीं रह जायेगा। नागरिकों की खुशहाली व तरक्की अन्य बातों के अलावा इस बात पर भी निर्भर करती है, कि वह शहर कितना स्वच्छ व सुरक्षित है।

बढ़ते हुए शहरीकरण के इस दौर में जहाँ हर इन्सान शहर में रहना चाहता है, शहरों में जनसँख्या का दबाव बहुत तेजी से बढ़ रहा है। ऐसे में कोई भी सरकार अकेले बिना जनसहभागिता के शहर को स्वच्छ व सुरक्षित नहीं रख सकती।

स्वच्छता व जनसहभागिता

हमारे प्रधानमंत्री जी का यह कथन कि "अगर सवा सौ करोड़ देशवासी यह ठान लें कि हमें स्वच्छ रहना है, तो हमारे देश को कोई भी गन्दा नही कर सकता"। यह कथन स्वच्छता के लिए जनसहभागिता के महत्व को परिलक्षित करता है ।

हम अपने वातावरण व समाज को स्वच्छ रखने में निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं।

(क) हम अपने घर व कार्यालय को स्वच्छ रखें, तथा दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें।
(ख) बच्चों को शुरू से ही स्वच्छता के प्रति जागरूक करें ।
(ग) सार्वजानिक स्थानों को गन्दा न करें। कूड़ा फेंकने के लिए, बनाये गए निर्धारित स्थान का ही उपयोग करें ।
(घ) घर का कूड़ा सड़क,गलियों तथा नालियों आदि में न फेंके ।
(ङ) घर में शौचालय बनवाएं और उसका इस्तेमाल करें। खुले में शौच ना करें ।
(च) समय की उपलब्धता के अनुसार, कम से कम महीने में एक बार सार्वजानिक स्थानों की सफाई के लिए श्रमदान करें, तथा दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें ।
(छ) घरों व कार्यालयों में पानी व बिजली का इस्तेमाल किफायती तरीके से करें। जब आवश्यकता न हो तो बिजली के स्विच तथा पानी के टैप बंद कर दें।
(ज) दैनिक जीवन में पौलीथीन का उपयोग न करें। ताकि पौलीथीन के कारण जमा होने वाले कचरे को रोका जा सके।
(झ) कार्यालयों में पुरानी व अनुपयोगी फाइलों के निस्तारण की उचित व्यवस्था करें।
(ञ) स्थान की उपलब्धता के अनुसार वृक्षारोपण करें ।

सुरक्षा व जनसहभागिता

एक जागरूक नागरिक ही सुरक्षित समाज का निर्माण कर सकता है। हम एक सुरक्षित समाज के विभिन्न पहलुओं के निर्माण में निम्नलिखित प्रकार से योगदान दे सकते हैं ।

(अ) अपने घर व बाहर सामान इत्यादि की चोरी आदि से सुरक्षा के लिए हमें आसामाजिक तत्वों के प्रति जागरूक रहना चाहिए। सतर्कता ही सुरक्षा की कुंजी है।

क्रमशः

(आ) सड़क पर सुरक्षित रहने के लिए यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए। दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट व चार पहिया वाहन चलाते समय सीटबेल्ट का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए।

(इ) महिलाओं के प्रति सम्मान की भावना रखनी चाहिए महिलाओं के साथ होने वाली छेड़छाड़ आदि की घटनाओं के विरोध में आवाज उठानी चाहिए,मूकदर्शक बनकर नहीं खड़े रहना चाहिए।

(ई) आजकल आतंकवाद ने विश्व में असुरक्षा का माहौल पैदा कर दिया है। ऐसी घटनाओं के प्रति हमें विशेष रूप से जागरूक रहने की जरूरत है। मकान किराये पर देने से पहले व्यक्ति की भली प्रकार से जाँच पड़ताल कर लेना चाहिए। किसी भी संदिग्ध व्यक्ति की सूचना पुलिस को अवश्य देना चाहिए।

जनसहभागिता बढ़ाने में सरकार व प्रशासन की भूमिका

शहरों को स्वच्छ एवं सुरक्षित रखने में जनसहभागिता बढ़ाने के लिए जनजागरूकता का होना बहुत आवश्यक है। जनजागरूकता बढाने में सरकार व प्रशासन निम्न प्रकार से महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं,

(क) प्रचार प्रसार के समस्त संसाधनों का भरपूर उपयोग करके सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी जनता तक पहुंचाई जाये।

(ख) सार्वजनिक स्थानों पर डस्ट बिन इत्यादि कि समुचित व्यवस्था हो, ताकि उसका उपयोग किया जा सके। कई बार ऐसा होता है कि डस्ट बिन न होने के कारण उसका उपयोग नहीं हो पता है।

(ग) प्रशाशन द्वारा समय समय पर समाज सेवा व श्रमदान आदि के लिए कैंप का आयोजन कराना चाहिए।

(घ) जनजागरूकता रैली ,जनसभाएं आदि करके जनता को जागरूक करने का काम बड़े पैमाने पर किया जा सकता है।

(ङ) बच्चों में स्वच्छता व सुरक्षा के प्रति जागरुकता बढ़ाने के लिए विद्यालयों में निबंध लेखन इत्यादि की प्रतियोगिताएं आयोजित की जा सकती हैं।

जनता की विश्वास बहाली हो गयी तो जनसहभागिता अपने आप बढ़ेगी।

नितांत आवश्यक है। जनता और प्रशासन दोनों मिलकर अगर इस दिशा में काम करेंगे तो जनसहभागिता जन आन्दोलन के रूप में परिलक्षित होगा।

इस प्रकार हमारे शहर स्वच्छ के साथ साथ सुरक्षित भी होंगे।

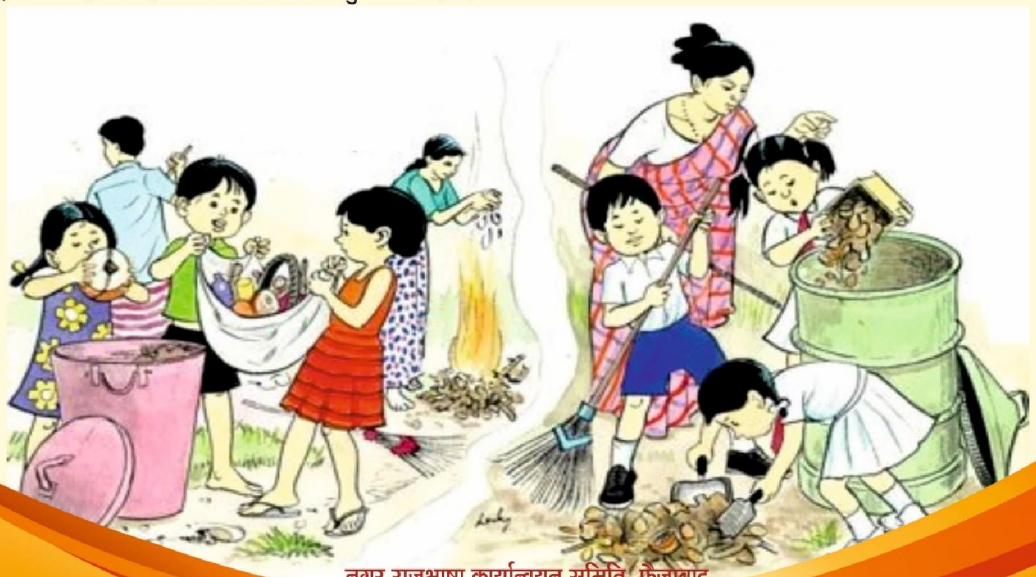

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद

वैदिक काल-भारत का लोक इतिहास-3
पुस्तक समीक्षा

नीरज कुमार सिंह
सदस्य सचिव (नराकास, फैजाबाद)
एवं प्रबंधक (राजभाषा)
बैंक ऑफ़ बड़ौदा,
क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या

विख्यात इतिहासकार श्री इरफान हबीब एवं श्री विजय कुमार ठाकुर द्वारा रचित ''वैदिक काल–भारत का लोक इतिहास–3'' उन तीन पुस्तकों के सेट की अंतिम पुस्तक है जो भारत के अतीत के आरंभिक हिस्से यथा, 1500 ई.पू. से 700 ई.पू. पर लिखी गयी है। जहाँ पहले दो अध्यायों में ऋग्वेद एवं उत्तर वैदिक ग्रंथों के संदर्भ से भारत–भूमि का परिचय प्राप्त होता है,वहीं अंतिम अध्याय में उसी काल की पुरातात्विक रूपरेखा को प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक की एक नयी पहल है ''मूल ग्रंथों के उद्धरण'' जिसमें पाठकों को विस्तृत रूप से प्रामाणिकता का आश्वासन देते हुए मूल ग्रंथों के अध्यायों की संख्या और वाक्यांशों के छोटे–छोटे संदर्भ दिये गये हैं। पुस्तक पर विस्तार से चर्चा करने से पूर्व दोनों लेखकों का परिचय जानना जरूरी है।

यशस्वी इतिहासकार श्री इरफान हबीब अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में प्रोफेसर एमेरिटस हैं। इनका जन्म वर्ष 1931 में हुआ. इन्हें पद्म भूषण से भी सम्मानित किया गया है। इन्होंने प्राचीन और मध्यभारत के इतिहास पर अध्ययन किया है। इरफान जी हिंदुत्व और मुस्लिम सांप्रदायिकता के खिलाफ कड़े रुख के लिए जाने जाते हैं। इन्होंने '1556–1707 एग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इंडिया' सहित कई किताबें लिखी हैं।

विजय कुमार ठाकुर पटना विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर रहे। इन्होंने 'अर्बनाइजेशन इन एंशियेंट इंडिया, हिस्टोरियोग्राफी ऑफ इंडियन फ्यूडलिज्म और सोशल डायमेंशंस ऑफ टेक्नोलॉजी : आयरन इन अर्ली इंडिया' लिखी हैं। इन्होंने 'टाउंस इन प्री–मॉडर्न इंडिया और पेजेंट्स इन इंडियन हिस्ट्री का सम्पादन भी किया है। लम्बी बिमारी के कारण वर्ष 2006 में विजय जी का निधन हो गया।

'वैदिक काल–भारत का लोक इतिहास–3' का विषय 1500 ई.पू. से 700 ई.पू. के बीच का काल–खंड है जिसके तहत ऋग्वेद और उसके बाद के ग्रंथों को क्रमशः व्यवस्थित किया गया है और उस युग के भूगोल, प्रौद्योगिकी, अर्थव्यवस्था और समाज के साथ–साथ धर्म और दर्शन आदि पहलुओं का अंवेषण किया गया है। उक्त आदिग्रंथों के माध्यम से तत्कालीन जन–जीवन की पुनर्रचना कर प्रस्तुतीकरण को बोधगम्य बनाया गया है। इस प्रक्रिया में लैंगिक और वर्ग–आधारित सामाजिक विभाजनों को खास तौर पर देखने का प्रयास किया गया है।

यह पुस्तक मूलतः तीन भागों में विभाजित है –

(1) पूर्व वैदिक काल (1500 ई.पू. से 1000ई.पू.)
(2) उत्तर वैदिक समाज (1000 ई.पू. से 700 ई.पू.)
(3) भारत, 1500 ई.पू. से 700 ई.पू : पुरातात्विक साक्ष्य.

पहले भाग में ऋग्वेद के साथ भारत के इतिहास का आरंभ बताते हुए ऋग्वेद पर विस्तार से चर्चा की गयी है. तत्पश्चात, पूर्ववर्ती और वास–क्षेत्र, अर्थव्यवस्था, समाज और राजव्यवस्था, आर्य और दस्यु व दास : चतुर्वर्ण का उदय एवं धर्म पर ऋग्वेद का प्रभाव बताया

क्रमशः

गया है. 'संस्कृति के अन्य आयाम' नामक खंड में ऋग्वेद से 'हलवाहे का गीत, जीवनयापन के विभिन्न साधन, नासदीय सूक्त एवं अक्ष सूक्त' उद्धृत किया गया है। इस खंड में मानचित्र के माध्यम से ऋग्वैदिक भू-भाग तथा पंजाब की नदियाँ दर्शायी गयी हैं. इस भाग में 12वीं सदी ई.पू. के अलीग्राम, स्वात घाटी (पाकिस्तान) में जुते हुए खेत का चित्र भी संलग्न है।

दूसरे भाग में ऋग्वेद के बाद के वैदिक ग्रंथों पर चर्चा करते हुए चारों वेदों यथा, ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद के अलावा 'अरण्य ग्रंथ, उपनिषद आदि पर भी संक्षिप्त में चर्चा की गयी हैं. इस भाग में 'अवेस्ता' पर भी चर्चा की गयी है। चूंकि ऋग्वैदिक क्षेत्र का कुछ हिस्सा अवेस्ताई दायरे में आता है इसलिये ईरान के प्राचीन धर्मग्रंथ, 'अवेस्ता' की विशेषताओं पर चर्चा की गयी है. इस काल खंड में राजनैतिक इतिहास, अर्थशास्त्र, समाज, धर्म आदि पर विस्तार से चर्चा करते हुए 'संस्कृति के अन्य आयाम' नामक खंड में 'शतपथ ब्राह्मण' से 'अग्नि का माथव विदेघ को पूर्व की ओर ले जाना', 'शुक्ल यजुर्वेद' से 'मेरी संपदा और पैदावार बढ़े', 'छांदोग्य उपनिषद' से 'आत्मा का पुनर्जन्म' उद्धृत किया गया है. इस खंड में मानचित्र के माध्यम से उत्तर वैदिक क्षेत्र तथा अवेस्ता का क्षेत्र दर्शाया गया है. इस भाग में जाति-व्यवस्था पर एक उद्धरण प्रस्तुत है :

''पुनर्जन्म की परिकल्पना स्पष्ट तौर पर जातिगत (वर्ण) समाज की जड़ता और गतिहीनता का परिणाम है, जहाँ जन्म की महत्ता सबसे अधिक है. कर्म के सिद्धांत के आधार पर अब आनुवंशिक जाति क्रम में किसी के स्थान को पिछले जन्म के उसके अपने पुण्य या पाप के आधार पर उचित ठहराया जा सकता था. कोई आश्चर्य नहीं कि मौजूदा व्यवस्था के प्रति आस्था बरकरार रखने की इसी क्षमता के कारण यह परिकल्पना जाति व्यवस्था का प्रमुख वैचारिक स्तंभ बन गयी. इस तरह, पुनर्जन्म लेने वाली जीवात्मा को परम सत्ता से जोड़ने से इनकार करने वाले परवर्ती सांख्य दर्शन की जड़े उपनिषद में भी उतनी ही गहरी हैं जितनी सर्वेश्वरवादी वेदांत में''।

तीसरे व अंतिम भाग में उक्त दोनों काल खंडों यथा, 1500-1000 ई.पू. और 1000-700 ई.पू. को समेकित कर पुरातात्विक साक्ष्य के आधार पर इसकी चर्चा हुई है. इस भाग में 'आर्य क्षेत्र की पुरातात्विक संस्कृति' पर विस्तार से चर्चाकी गयी है. पुस्तक से निम्न उद्धरण प्रस्तुत है :

''वैदिक ग्रंथों में मंदिर या प्रतिमा का कोई संदर्भ नहीं मिलता और धार्मिक उपासना के यज्ञ (अध्याय 1.6 और 2.5) पर केंद्रित होने से भी हमारा काम और मुश्किल हो जाता है. कोई मूर्ति या प्रतीक नहीं मिलते कि हमें किसी पुरातात्विक स्थल की पहचान आर्यों की बस्ती के तौर पर करने में मदद मिल सके. यहाँ तक कि यज्ञवेदियाँ भी अस्थायी ढाँचा हुआ करती थीं जिन्हें अनुमानतः रिहाइशी इलाके के पास बनाया जाता था इसलिये इन्हें ढूंढ पाना हमारे लिये बहुत आसान नहीं है।

ऐसी स्थिति में अपनी ऐतिहासिक संस्कृति का मेल पुरातात्विक संस्कृति से करना मुश्किल होता है मसलन यह मानना बेकार है कि आरंभिक भारतीय आर्य एक विशेष प्रकार की बर्तन बनाने की शैली, जैसे चित्रित धूसर मृद्भांड, से जुड़े थे जैसा कि कभी गंभीरता से माना जाता था। ''

उपरोक्त अनुसार आर्यों की भाषा, खान-पान, रहन-सहन आदि पर भी विस्तार से चर्चा की गयी है. इस भाग के अगले शीर्षक 'प्रायद्वीपीय भारत' में मालवा संस्कृति के पश्चात 1400 ई.पू. में आरंभ और 1000 ई.पू. तक महाराष्ट्र में फली-फूली जोर्वे संस्कृति पर

क्रमशः

चर्चा की गयी है. जोर्वे संस्कृति में कृषि और जनसंख्या का उल्लेखनीय विस्तार हुआ. अगले शीर्षक 'लोहे का आगमन' में लौह के विविध उपयोगों और उसकी उत्पत्ति पर विस्तार से चर्चा की गयी है. इस खंड में मानचित्र के माध्यम से 'पुरातात्विक संस्कृतियाँ, 1500–700 ई.पू.' तथा 'आरंभिक लौह युग के पुरातात्विक स्थल' दर्शाये गये हैं। इसके अलावा, तालिका के माध्यम से 'काले एवं लाल मृद्भांड का कालक्रम' तथा चित्र के माध्यम से ब्रह्मगिरि की महापाषाणकालीन कब्र भी दर्शायी गयी है. पुरात्तात्विक साक्ष्यों के आधार पर प्रमुख क्षेत्रीय संस्कृतियों का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया गया है. इतिहास में लोहे का आगमन एक महत्त्वपूर्ण घटना है जो इसी युग में सम्पन्न हुई थी, इसलिये उसका वर्णन किंचित विस्तार से हुआ है. साथ ही, जाति व्यवस्था के आरंभ पर भी इस पुस्तक में अपेक्षित प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक में लेखकों द्वारा कई टिप्पणियाँ की गयी हैं जिसमें से तीन मुख्य टिप्पणियाँ हैं : ऋग्वेद के नदी सूक्त के साथ भारत के ऐतिहासिक भूगोल का दस्तावेजीकरण आरंभ हुआ, इसलिये ऐतिहासिक भूगोल पर एक टिप्पणी है. जाति–व्यवस्था की स्थापना वैदिक ग्रंथों में होने के अनुमान के मद्देनजर विकास के लम्बे दौर के बाद प्रस्तुत व्यवस्था के आधार पर इसकी मौलिक विशेषताओं पर एक टिप्पणी है। तीसरी टिप्पणी तथाकथित 'महाकाव्य पुरातत्वशास्त्र' के विषयों से जुड़ी है. मूल ग्रंथों के उद्धरणों, तार्किक व्याख्याओं और विश्लेषणों, अनेक प्रामाणिक चित्रों और नक्शों से समृद्ध यह पुस्तक न सिर्फ रुचिकर, बल्कि पाठकों को विचारोत्तेजक भी लगेगी।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद : सदस्यों की सूची

कम सं.	कार्यालय का नाम एवं पता	दूरभाष संख्या (लैंड लाइन/फैक्स)	कार्यालय प्रमुख का नाम एवं पदनाम	हिन्दी अधिकारी/ प्रतिनिधि का नाम	ई–मेल का पता
1	क्षेत्रीय कार्यालय, बैंक ऑफ़ बड़ौदा प्रथम तल ''बड़ौदा भवन'' साकेतपुरी कालोनी, देवकाली ओवरब्रिज के पास, पो.–अयोध्या जिला – अयोध्या (उ.प्र.) 224123	–	श्री अनिल कुमार झा सहायक महाप्रबन्धक एवं अध्यक्ष, नराकास फैजाबाद 9554968300	श्री नीरज कुमार सिंह सचिव, नराकास एवं राजभाषा प्रभारी 8904569156	rajbhasha.faizabad@bankofbaroda.com
2	कार्यालय महाप्रबन्धक दूरसंचार, बी.एस.एन.एल. अयोध्या (उ.प्र.)224001	–	श्री प्रभांश यादव (महाप्रबन्धक) 9415222217	श्री जगन्नाथ तिवारी (कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक) 9454587238	gmtdfaizb@bsnl.co.in gmtdfy@gmail.com
3	पंजाब नैशनल बैंक, मण्डल कार्यालय रीडगंज, अयोध्या (उ.प्र.) 224001	05278–244551/ 240559/244371	श्री के. एल. बैरवा (मण्डल प्रमुख) 9004035058	श्री संतोष कुमार वरिष्ठ प्रबन्धक(राजभाषा) 9260996069	cofzdrajbhasha@pnb.co.in cofzd@pnb.co.in
4	भारतीय स्टेट बैंक, मुख्य शाखा सिविल लाइन्स, अयोध्या (उ.प्र.) 224001		श्री केदारनाथ (मुख्य प्रबन्धक) 7521900917	–	sbiin.00075@sbi.co.in
5	बैंक ऑफ इंडिया (मुख्य शाखा) फ्लोर मनूचा, रिकाबगंज अयोध्या (उ.प्र.) 224001	05278–221436 222143	श्री मो. शाहिद (मुख्य प्रबंधक) 9450954107	–	faizabad.varanasi@bankofindia.co.in
6	सेण्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया प्रथम तल, आर. एल. कॉम्प्लेक्स, निकट पारले बिस्कुट फैक्ट्री, देवकाली बाई पास अयोध्या, (उ.प्र.) 224001		श्री सुरेश कुमार सिंह (क्षेत्रीय प्रबन्धक) 8303714301	श्री सुरेन्द्र सिंह यादव प्रबन्धक (राजभाषा) 8303714296	rmayodro@centralbank.co.in hindiayodro@centralbank.co.in
7	यूको बैंक (मुख्य शाखा) 105/165 दालमण्डी वार्ड, धनीराम निवास, रिकाबगंज, अयोध्या (उ.प्र.) 224001	05278–222101	श्री मनोर कुमार सिंह (मुख्य प्रबन्धक) 7003558561		faizab@ucobank.co.in
8	केनरा बैंक (मुख्य शाखा) सिविल लाइन्स, अयोध्या (उ.प्र.) 224001	05278–223106	श्री सौरभ शुक्ल (वरिष्ठ प्रबन्धक) 8173007727	श्री रवि कुमार सिन्हा प्रबंधक (राजभाषा) 9234525717	cb1641@canarabank.com ravikumarsinhaa@canarabank.com
9	भारतीय जीवन बीमा निगम मण्डल कार्यालय, ''जीवन प्रकाश'' अयोध्या रोड, बेनीगंज, अयोध्या (उ.प्र.)224001		श्री चन्द्र सिंह दासपा (वरि. मण्डल प्रबन्धक) 9891144890	श्री अजय कुमार श्रीवास्तव (प्रशासनिक अधिकारी एवं राजभाषा प्रभारी) 9415719476	sdm.faizabad@licindia.com pir.faizabad@licindia.com
10	दि न्यू इंडिया एश्योरेंस कम्पनी लि. (मण्डलीय कार्यालय) कोहिनूर पैलेस कम्पाउण्ड, रीडगंज, अयोध्या (उ.प्र.) 224001	05278–241179 05278–240016	श्री गुलशन वर्मा (मण्डलीय प्रबन्धक) 9415076931	श्री ओ. पी. सिंह संपर्क अधिकारी (राजभाषा) 9044256040	ss.pandey@newindia.co.in nia421700@newindia.co.in

क्रमशः

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद : सदस्यों की सूची

कम सं.	कार्यालय का नाम एवं पता	दूरभाष संख्या (लैंड लाइन/फैक्स)	कार्यालय प्रमुख का नाम एवं पदनाम	हिन्दी अधिकारी/ प्रतिनिधि का नाम	ई–मेल का पता
11	यूनाइटेड इन्श्योरेंस कम्पनी लि. सिविल लाइन्स, अयोध्या (उ.प्र.) 224001	05278–221196	श्री आशीष त्रिपाठी (वरि. शाखा प्रबन्धक) 9450601659	श्रीमती अनिता सिंह (राजभाषा प्रभारी) 9580850046	ashishtripathi@uiic.co.in anitasingh@uiic.co.in
12	इंडियन ओवरसीज बैंक, (मुख्य शाखा) अल्का टावर, रिकाबगंज, नियावां रोड, अयोध्या (उ.प्र.) 224001	05278–225478	श्री प्रियंक सिंह (शाखा प्रबन्धक) 889676444		iob.1429@iob.in
13	पंजाब एंड सिन्ध बैंक 5/2/74, साहबगंज, निकट पुलिस चौकी अयोध्या फैजाबाद रोड (उ.प्र.) 224001	05278–240042	श्री सुनील कुमार पांडे (शाखा प्रबन्धक) 8127526708	–	f1357@psb.co.in
14	आई डी बी आई बैंक पुष्पराज, 1/13/330 सिविल लाइन्स, अयोध्या (उ.प्र.) 224001	05278–223057	श्री हितेष कुमार जैन (शाखा प्रबन्धक) 76019071222	सुश्री गरिमा श्रीवास्तव (संपर्क अधिकारी) 7007592627	ibkl0000398@idbi.co.in
15	इण्डियन बैंक (मुख्य शाखा) अल्का टावर, रिकाबगंज, नियावां रोड, अयोध्या (उ.प्र.) 224001	05278–220076	श्री आशीष श्रीवास्तव (शाखा प्रबन्धक) 7233002140	–	faizabad@indianbank.co.in
16	बैंक ऑफ महाराष्ट्र आदर्श भवन, बाबू बाजार अयोध्या (उ.प्र.) 224123	05278–232133	श्री शैलेष कुमार (शाखा प्रबन्धक) 8574234123	श्रीमती शानो देवी (राजभाषा प्रभारी) 7706832238	bom1704@mahabank.co.in
17	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया क्षेत्रीय कार्यालय, 436, अत्तरदीप कॉम्प्लेक्स, देवकाली बाईपास, अयोध्या (उ.प्र.) 224001		श्री मुकुल श्रीवास्तव (क्षेत्र प्रमुख) 9987008677	श्री रतन कुमार सिंह वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) 7008407571	rhayodhya@unionbankofindia.com rajbhasha.roayodhya@unionbankofindia.com
18	आकाशवाणी बेगमगंज, गढ़ैया धारा मार्ग, अयोध्या 224001	05278–260188	श्री आर. एम. मिश्रा निदेशक एवं केन्द्राध्यक्ष 9415116395	श्री योगेन्द्र प्रसाद (कार्यक्रम अधिशाषी एवं प्रभारी राजभाषा) 9431399598	faizabad@air.org.in airfzd@rediffmail.com
19	नेशनल इन्श्योरेंस कम्पनी लि. 4101, वी. स्क्वायर, सिविल लाइन्स, अयोध्या(उ.प्र.) 224001	05278–222549	श्री राम राज (मुख्य प्रबन्धक) 9451904441 7704900278	श्री दिलीप कुमार (वरिष्ठ सहायक) 9453063027	tej.narain@nic.co.in 450305@nic.co.in
20	केन्द्रीय विद्यालय कैण्ट, अयोध्या (उ.प्र.) 224001	05278–222591 05278–228462	श्री अमित श्रीवास्तव (प्राचार्य) 9473898869	श्री रजत कुमार (पी.जी.टी., हिन्दी) 9889730152	kafaizabad@yahoo.co.in

क्रमशः

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद : सदस्यों की सूची

क्रम सं.	कार्यालय का नाम एवं पता	दूरभाष संख्या (लैंड लाइन/फैक्स)	कार्यालय प्रमुख का नाम एवं पदनाम	हिन्दी अधिकारी/ प्रतिनिधि का नाम	ई–मेल का पता
21	जवाहर नवोदय विद्यालय डाभासेमर,अयोध्या (उ.प्र.) 224001	05278–245656	श्री कृष्ण कुमार मिश्रा (प्राचार्य) 9532884651	श्री मयंक तिवारी (पी.जी.टी., हिन्दी) 9532884651	jnvfaizabad@gmail.com
22	भारतीय खाद्य निगम (जिला कार्यालय) 3/19/141–ए बी,नियावां,अयोध्या (उ.प्र.) 224001	9839091677	श्री रजनीश कुमार (मंडल प्रबन्धक) 9076500141	श्री रवीन्द्र कुमार प्रबंधक(हिन्दी) 9450767335	faizaup.fci@nic.in
23	प्रधान डाकघर फैजाबाद मण्डल, अयोध्या 224001	05278–222315	श्री रनवीर सिंह तोमर (प्रवर डाकघर अधीक्षक)	–	dofaizabad.up@india post.gov.in
24	कार्यालय कमांडेन्ट,–63, बटालियन के.रि.पु.ब., अयोध्या 224001	–	श्री छोटे लाल (कमांर्डिंग ऑफीसर) 63, बटालियन 9450916404	श्री बर्मन हेड कांस्टेबल (राजभाषा प्रभारी) 9475247187	co63bn@crpf.gov.in
25	नैशनल सैंपल सर्वे कार्यालय (क्षेत्र निकाय विभाग) उप क्षेत्रीय कार्यालय 5/11/143 मुखर्जी निवास, रीडगंज, अयोध्या, उ.प्र. –224001	05278–241953	श्री पवन कुमार गुप्ता (वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी) 6388149407	श्री पवन कुमार कनिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी 9670700799	foodsrofzd@gmail.com sharmapawan181@gmail.com
26	कार्यालय छावनी परिषद, अयोध्या, छावनी –224001	05278–224325	श्री महेश वड्डे आई.डी.ई.एस. मुख्य अधिशाषी अधिकारी 9839044960	–	ceofaiz-stats@nic.in

कलम, आज उनकी जय बोल

जो अगणित लघु दीप हमारे
तूफानों में एय किनारं
जल–जलाकर बुझ गए किसी दिन
कलम, आज उनकी जय बोल

पीकर जिनकी लाल शिखाएं
उगल रहीं लपट दिशाएं
जिनके सिहनाद से सहमी
धरती रही अभी तक डोल
कलम, आज उनकी जय बोल

"रामधारी सिंह दिनकर"

संयोजक : बैंक ऑफ़ बड़ौदा Bank of Baroda

पंजाब नैशनल बैंक (भारत सरकार का उपक्रम)

SBI भारतीय स्टेट बैंक STATE BANK OF INDIA

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया

यूनियन बैंक Union Bank

BOI बैंक ऑफ़ इंडिया Bank of India

इंडियन बैंक इलाहाबाद Indian Bank ALLAHABAD

केनरा बैंक Canara Bank

बैंक ऑफ महाराष्ट्र

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

यूको बैंक

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक

IDBI BANK

नेशनल इन्श्योरेन्स National Insurance

LIC भारतीय जीवन बीमा निगम

भारत संचार निगम लिमिटेड BHARAT SANCHAR NIGAM LIMITED

केन्द्रीय विद्यालय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, फैजाबाद

Designed & Printed By
UNIVERSAL SOLUTIONS
HAZRATGANJ, LKO. 9935542417